देव-शास्त्र-गुरु विधान

रचयिता

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा. ब्र. संजयभैया, मुरैना

कृति	:	देव-शास्त्र-गुरु विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	प्रथम, 1100 प्रतियाँ
कवर-पृष्ठ	:	प्राची जैन शिवपुरी
प्रसंग	:	22वाँ चातुर्मास 2020 शिवपुरी (म. प्र.)
लागत मूल्य	:	12/-
प्रकाशक एवं	:	
प्राप्ति स्थान	:	श्री जैनोदय विद्या समूह सम्पर्क-9425128817
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

चौधरी इंद्रकुमार-श्रीमती शीला जैन

श्री सुधीरकुमार-श्रीमती साक्षी जैन

(पुत्री-दामाद, गुना)

कु. स्वाति, सौरभ जैन शिवपुरी (म.प्र.)

मोबा.-9993017645

अंतर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

जिस समय पूरा विश्व कोरोना जैसी महामारी से जूझ रहा था वहीं शिवपुरी में प्रवास के दौरान प्रभु भक्ति करते हुए आगम के आधार पर पूर्वकृत पूजन विधि को ध्यान में रखकर अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत परमपूज्य मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज ने प्रस्तुत कृति **'देव-शास्त्र-गुरु विधान'** की रचना करके महान् उपकार किया है। प्रस्तुत कृति में मुनिश्री के द्वारा देवशास्त्रगुरु की भक्ति का सुन्दर सोपान प्रदान किया है। जो कि श्रावकों को भक्ति करने में पूर्ण सहयोगी बनेगी।

निर्मल देदखुर (शिखर), राजेश बोटा, माणिक, अर्चित, रूपेश, सौरभ, पीयूष, अभिषेक आदि लोगों ने इस कृति में जो भी सहयोग किया उन सबके लिए बहुत-बहुत साधुवाद।

सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

– बा.ब्र. संजय, मुरैना

दर्शन पाठ (चौपाई)

दर्शन श्री देवाधिदेव का, दर्शन नाशक पाप मोह का।
दर्शन स्वर्ग सीढ़ियाँ पावन, दर्शन रहा मोक्ष का साधन ॥1॥
प्रभु जिनेन्द्र का दर्शन करके, साधु संत का वंदन करके।
नशे पुरानी पाप कहानी, झड़े अंजुली में ज्यों पानी ॥2॥
पद्मराग मणि जैसा सुंदर, वीतराग मुख आज देखकर।
जन्म-जन्म में पाप कमाते, दर्शन से वो सब नश जाते ॥3॥
जगत अंध को हरने वाला, हृदय कमल विकसाने वाला।
हर पदार्थ जो करे प्रकाशन, ऐसा जिन सूरज का दर्शन ॥4॥
धर्मामृत वरसाने वाला, जन्मदाह दुख हरने वाला।
सुखसागर का करता वर्धन, ऐसा जिन चंदा का दर्शन ॥5॥
जीव आदि सब तत्त्व दिखाये, सम्यक्त्वादि गुण प्रकटाये।
प्रशांत रूप दिगम्बर प्यारा, देवाधिदेव को नमन हमारा ॥6॥
चिदानंद जिन एक रूप हैं, जो परमात्म प्रकाश नित्य हैं।
सिद्धातम परमातम न्यारे, जिनको नमोऽस्तु रोज हमारे ॥7॥
अन्य शरण कोई ना मेरी, केवल आप शरण हो मेरी।
अतः बहाके करुणा झरना, मेरी रक्षा-रक्षा करना ॥8॥
तीन काल में तीन लोक में, वीतराग सा नहीं विश्व में।
तारक-तारक-तारक ना है, हुआ न होगा अब भी ना है ॥9॥
रहे सदा जिन भक्ति मुझमें, रहे सदा जिन भक्ति मुझमें।
भव-भव में हो हो दिन-दिन में, रहे सदा जिन भक्ति मुझमें ॥10॥
यदि जिनधर्म त्याग है करना, तो मुझको चक्री ना बनना।
भले दुखी दारिद्र रहूँ मैं, पर जिनधर्म न छोड़ सकूँ मैं ॥11॥
जन्म-जन्म में पाप किये जो, जन्म करोड़ों में अर्जित जो।
जन्म-मृत्यु वा रोग बुढ़ापा, जिनदर्शन से नश ही जाता ॥12॥
सफल हुए द्वय नयना मेरे, चरण कमल कर दर्शन तेरे।
नाथ! मुझे लगता अब ऐसा, भव जल शेष बचा चुल्लू सा ॥13॥

===

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शांति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, ऐसो पञ्च णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥1॥ तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥2॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥3॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥4॥ तेरा...

===

मंगलाचरण

ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नमः सिद्धेभ्यः।
ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नमः सिद्धेभ्यः॥

(जोगीरासा)

श्री अरिहंत सिद्ध स्वामीजी, सच्चे देव हमारे।
ज्ञानी ध्यानी नग्न दिगम्बर, गुरु निर्ग्रंथ हमारे॥
पूज्य आर्ष गुरु परम्परा के, आगम शास्त्र हमारे।
सच्चे देव शास्त्र गुरु हमको, हैं प्राणों से प्यारे॥
ॐ नमः सिद्धेभ्यः - 4

यही हमारे इष्ट देवता, ये कुलदेव हमारे।
प्रथम मंगलाचरण यही हैं, मोक्षमार्ग के द्वारे॥
यही धर्म प्रारम्भ कराते, देते सदा सहारे।
अतः इन्हीं का आश्रय लेकर, भव के मिलें किनारे॥
ॐ नमः सिद्धेभ्यः - 4

देव शास्त्र गुरु सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरित के स्वामी।
रत्नत्रय का गजरथ देकर, मोक्ष घुमाएँ ज्ञानी॥
सो भव दुख का चक्र छूटता, निज सुख लक्ष्य दिलाएँ।
रोग शोक फिर क्या कर लें जब, सुव्रत प्रभु को ध्याएँ॥
ॐ नमः सिद्धेभ्यः - 4

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी ना होवे॥
कण-कण मंगल, क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
देव शास्त्र गुरु को नमोऽस्तु कर, सबका मंगल होवे॥
ॐ नमः सिद्धेभ्यः - 4

(पुष्पांजलिं...)

देव-शास्त्र-गुरु विधान

स्थापना (दोहा)

देव सिद्ध अरिहन्त हैं, शास्त्र जिनागम ग्रंथ।
नग्न दिगंबर गुरु जिन्हें, नमोऽस्तु नन्तानन्त॥

(हरिगीतिका)

हैं सिद्ध वा अरिहंत श्रद्धा, शास्त्र सम्यग्ज्ञान हैं।
निर्ग्रन्थ गुरु चारित्र तीनों, भक्त जन के प्राण हैं॥
सो देव गुरुवर शास्त्र भजने, हम करें आह्वान भी।
कल्याण करने हो नमोऽस्तु, आइए भगवान जी॥

(दोहा)

अरिहन्तों को नमन कर, शास्त्र जिनागम ध्याएँ।
निर्ग्रन्थों की अर्चना, करके नमोऽस्तु गाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

चैतन्य वैभव देख करके, देव भरते नीर हैं।
ले अर्चना की भक्त नैया, पा रहे भव तीर हैं॥
हम जन्म आदिक दुख मिटाने, नीर अर्पित कर रहे।
जिनदेव गुरुवर शास्त्र भजने, हम नमोऽस्तु कर रहे॥

(दोहा)

निर्मल करने चेतना, प्रासुक नीर चढ़ाएँ।
देव-शास्त्र-गुरु तीन की, पूजा आज रचाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

संसार के जलते महल में, जीव सब संतप्त हैं।
जिनधर्म के आश्रित हुए वो, शान्ति पाते भक्त हैं॥

यह मोह ज्वाला शांत करने, गंध अर्पित कर रहे।
जिनदेव गुरुवर शास्त्र भजने, हम नमोऽस्तु कर रहे॥
चंदन सी हो चेतना, सो हम चरण चढ़ाएँ।
देव-शास्त्र-गुरु तीन की, पूजा आज रचाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

भण्डार अक्षय है स्वयं का, आज तक सोचा नहीं।
सो खण्ड खण्डित हो भटक के, खो रहे मौका सही॥
सिद्धीश के स्वामी बनें सो, पुंज अर्पित कर रहे।
जिनदेव गुरुवर शास्त्र भजने, हम नमोऽस्तु कर रहे॥
अक्षय श्रद्धा कर सकें, सो हम पुंज चढ़ाएँ।
देव-शास्त्र-गुरु तीन की, पूजा आज रचाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

कैवल्य तरु के पुष्प खिलते, ब्रह्मचारी बाग में।
मुक्तीवधू नत नयन हो वर-माल लाए हाथ में॥
अब्रह्म की पीड़ा मिटाने, पुष्प अर्पित कर रहे।
जिनदेव गुरुवर शास्त्र भजने, हम नमोऽस्तु कर रहे॥
आतम पुष्प खिला सकें, सो हम पुष्प चढ़ाएँ।
देव-शास्त्र-गुरु तीन की, पूजा आज रचाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

अध्यात्म का रस पान करके, भोग तृष्णा भागती।
संतोष रस आनंद चखने, भक्ति की लौ जागती॥
निःशेष तृष्णा हो अतः नैवेद्य अर्पित कर रहे।
जिनदेव गुरुवर शास्त्र भजने, हम नमोऽस्तु कर रहे॥

आत्म स्वाद के रसिक हो, हम नैवेद्य चढ़ांय।
देव-शास्त्र-गुरु तीन की, पूजा आज रचाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

निर्ग्रन्थ सम्यग्ज्ञान से जब, अंध हरते मोह का।
बन के तभी अरिहंत स्वामी, पथ दिखाते मोक्ष का।
अज्ञान दुख का अंध हरने, आरती हम कर रहे।
जिनदेव गुरुवर शास्त्र भजने, हम नमोऽस्तु कर रहे॥
ज्ञान ज्योति की प्राप्ति को, दीपक आज जलाएँ।
देव-शास्त्र-गुरु तीन की, पूजा आज रचाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

सबको जलाते कर्म हैं पर, जो जलाते कर्म को।
वह भूप हैं चित्-रूप हैं, उनके बिना क्या धर्म हो॥
हम धर्म से हर कर्म हरने, धूप अर्पित कर रहे।
जिनदेव गुरुवर शास्त्र भजने, हम नमोऽस्तु कर रहे॥
ध्यान अग्नि की प्राप्ति हो, सो हम धूप चढ़ाएँ।
देव-शास्त्र-गुरु तीन की, पूजा आज रचाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

जिन भक्ति से तो भुक्ति वाले, मोह के फल भी लगें।
जो आत्म साधक को न रुचते, मोक्ष के फल ही रुचें॥
दो भक्ति का फल मुक्ति सो फल, भक्त अर्पित कर रहे।
जिनदेव गुरुवर शास्त्र भजने, हम नमोऽस्तु कर रहे॥
महा मोक्ष फल प्राप्ति को, ले फल आज चढ़ाएँ।
देव-शास्त्र-गुरु तीन की, पूजा आज रचाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

ले अष्ट द्रव्यों के सुमिश्रण, अर्घ्य ये तैयार हैं।
श्रद्धा समर्पण और भक्ति, भक्त के त्यौहार हैं॥
त्यौहार करके नाच गा के, अर्घ्य अर्पित कर रहे।
जिनदेव गुरुवर शास्त्र भजने, हम नमोऽस्तु कर रहे॥

(त्रिभंगी)

हैं धर्म स्वरूपी, चेतन रूपी, देव-शास्त्र-गुरु आप रहे।
हम हैं अज्ञानी, पापी मानी, कर्मों के अभिशाप रहे॥
फिर मिलन हमारा, कैसा प्यारा, हो पाएगा कौन कहें।
सो अर्घ्य चढ़ाके, आतम ध्याके, हम तुम स्वामी साथ रहें॥
आठों द्रव्य सजाए के, सादर अर्घ्य चढ़ाएँ।
देव-शास्त्र-गुरु तीन की, पूजा आज रचाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(दोहा)

मूलगुणी निर्दोष हैं, दे धार्मिक उपदेश।
करके नमोऽस्तु हम भजें, श्री अरिहन्त जिनेश॥

जन्म के दस अतिशय (लय-माता तू दया करके...)

पिछले तप के फल से, यों पुण्यार्जन कर लें।
हो देह पसीना बिन, कितना परिश्रम कर लें॥
दस अतिशय जन्मों के, अरिहन्त प्रभु के हों।
ये अर्घ्य समर्पित कर, अपने भी नमोऽस्तु हों॥

ॐ ह्रीं जन्मातिशय निःस्वेदत्व गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

छद्मस्थ अवस्था तक, लेते भोजन पानी।
फिर भी मल मूत्र न हो, जय हो साधक ज्ञानी॥ दस...

ॐ ह्रीं जन्मातिशय निर्मलत्व-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥2॥

ममता से माता का, ज्यों श्वेत दुग्ध होता।
करुणामूर्ति प्रभु का, त्यों श्वेत रुधिर होता॥
दस अतिशय जन्मों के, अरिहन्त प्रभु के हों।
ये अर्घ्य समर्पित कर, अपने भी नमोऽस्तु हों॥

ॐ ह्रीं जन्मातिशय श्वेतरुधिर-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥3॥

संस्थान सुडौल रहें, सर्वांग मनोहर हों।
हो नाप तौल बढ़िया, अंगाकृति सुन्दर हों॥ दस...

ॐ ह्रीं जन्मातिशय समचतुस्रसंस्थान-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥4॥

हो ध्यान-अग्नि तन से, कर्मार्जन से तन हो।
पा वज्रवृषभनाराच, संहनन शुद्धातम हो॥ दस...

ॐ ह्रीं जन्मातिशय वज्रवृषभनाराचसंहनन-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥5॥

जब पुण्य उदय आये, सुन्दरतम तन पाये।
वैराग्य शान्ति लख के, सुन्दरता शर्माये॥ दस...

ॐ ह्रीं जन्मातिशय सर्वांगसुंदरशरीर-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥6॥

देवों से भी ज्यादा, हो कल्पवृक्ष जैसी।
सो भक्त भ्रमर गूँजे, तन की खुशबू ऐसी ॥ दस...

ॐ ह्रीं जन्मातिशय सुगंधितशरीर-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥7॥

तन लक्षण एक हजार, शुभ आठ साथ होते।
नौ सौ व्यंजन जिनमें, शंखादिक अघ धोते॥ दस...

ॐ ह्रीं जन्मातिशय अष्टसहस्रलक्षण-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥8॥

मुनि वैयावृत्ति कर, पा अतुल्य बल तन का।
हो महाप्रतापी प्रभु, पथ चलते आतम का ॥ दस...

ॐ ह्रीं जन्मातिशय अतुलबल-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥9॥

हित-मित-मोहक वाणी, अमृत जैसी झरती।
सब जग की कल्याणी, सुख ज्ञानामृत भरती॥ दस...

ॐ ह्रीं जन्मातिशय हित-मित-प्रियवाणी-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥10॥

केवलज्ञान के दस अतिशय (विष्णु)

शत-शत योजन सुभिक्ष होता, हों जिनराज जहाँ।
स्वस्थ सुखी सम्पन्न प्रजा हो, धार्मिक राज वहाँ॥
घाति विजय से पूज्य ज्ञान के, दस अतिशय पूजें।
अर्घ्य चढ़ा हम भक्त जनों के, नमोऽस्तु भी गूँजें॥

ॐ ह्रीं ज्ञानातिशय चतुर्दिक्-सुभिक्षता-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥11॥

केवलज्ञानी होकर स्वामी, जब भी कभी चलें।
बीस हजार हाथ धरती से, ऊपर गमन करें॥ घाति...

ॐ ह्रीं ज्ञानातिशय नभोगमन-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥12॥

जन्म-जन्म के वैरी प्राणी, अभय दान पाते।
मैत्रीभाव हृदय में धरकर, धार्मिक हो जाते॥ घाति...

ॐ ह्रीं ज्ञानातिशय मैत्रीभाव-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥13॥

कवलाहार न उनका जिनको, केवलज्ञान हुआ।
मोहजयी ना दुर्बल होते, निज रसपान हुआ॥ घाति...

ॐ ह्रीं ज्ञानातिशय संतुष्टि-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥14॥

अरिहन्तों की समीपता में, चार तरह वाले।
दुःख उपसर्ग कभी न होते, कल्मष के छाले॥ घाति...

ॐ ह्रीं ज्ञानातिशय उपसर्गाभाव-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥15॥

समवसरण आसीन प्रभु जी, होते एक मुखी।
फिर भी चार मुखी दिखते हैं कोई नहीं दुखी॥ घाति...

ॐ ह्रीं ज्ञानातिशय चतुर्मुख-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥16॥

द्वादशांग की हर विद्या के, प्रभु होते ईश्वर।
सो चरणों में सकल जगत हो, जय विद्यासागर॥
घाति विजय से पूज्य ज्ञान के, दस अतिशय पूजें।
अर्घ्य चढ़ा हम भक्त जनों के, नमोऽस्तु भी गूँजें॥

ॐ ह्रीं ज्ञानातिशय सर्वविद्येश्वर-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥17॥

परम परम औदरिक तन जब, निगोदिया बिन हो।
मणिरत्नों सम निर्मल होता, होता छाया बिन॥ घाति...

ॐ ह्रीं ज्ञानातिशय निरच्छाया-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥18॥

चंचल लोगों की आँखों की, पलकें भी झपकें।
प्रभु एकाग्रचित्त होते सो, पलकें न झपकें॥ घाति...

ॐ ह्रीं ज्ञानातिशय अपलक-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥19॥

जब छद्मस्थ दशा गुजरी तो, सम नख-केश हुए।
कर्मों का आगमन हुआ यों, स्वस्थ जिनेश हुए॥ घाति...

ॐ ह्रीं ज्ञानातिशय समाननखकेश-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥20॥

देवकृत चौदह अतिशय (विद्योदय)

अरिहन्तों की दिव्य देशना, जग कल्याणी।
अर्धमागधी मागध सुरगण, करते वाणी॥
पूज्य देवकृत चौदह अतिशय, सुर की माया।
अरिहन्तों को करके नमोऽस्तु, अर्घ्य चढ़ाया॥

ॐ ह्रीं देवकृत अतिशय अर्धमागधीभाषा-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥21॥

प्रभु समीप में प्रीतिंकर सुर, वैर मिटाएं।
जीव परस्पर मैत्री धरकर, प्रेम बढ़ायें॥ पूज्य...

ॐ ह्रीं देवकृत अतिशय मैत्रीभाव-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥22॥

एक साथ छह ऋतुओं के फल-फूल फसल हों।
वसुंधरा खुशहाल हुई है, जग मंगल हों॥ पूज्य...

ॐ ह्रीं देवकृत अतिशय सर्व-ऋतुफल-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ।23 ॥

चार कोश तक दर्पण जैसी, होती धरती।
निर्मल हीरा मोती जैसे, मन को हरती॥ पूज्य...

ॐ ह्रीं देवकृत अतिशय निर्मलभू-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ।24 ॥

प्रभु विहार का समाचार जब, सुर गण पाते।
तो अनुकूल सुगन्धित सर-सर, पवन बहाते॥ पूज्य...

ॐ ह्रीं देवकृत अतिशय सुगंधितपवन-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ।25 ॥

प्रभु विहार से हर प्राणी हो, परमानंदी।
जग के सुख-दुख सभी भूल हों, ज्ञानानंदी ॥ पूज्य...

ॐ ह्रीं देवकृत अतिशय परमानंद-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ।26 ॥

वायुकुमार के देव धरा को, स्वच्छ बनाते।
दसों दिशा से शूल-धूल हर, हर्ष बहाते॥ पूज्य...

ॐ ह्रीं देवकृत अतिशय निर्मलदिशा-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ।27 ॥

मेघकुमार देवों ने श्रद्धा, भक्ति दिखाई।
गंधोदक की रिमझिम-रिमझिम, वृष्टि कराई॥ पूज्य...

ॐ ह्रीं देवकृत अतिशय गंधोदकवृष्टि-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ।28 ॥

प्रभु विहार में प्रभु चरणों के, नीचे जाके।
सुर दो सौ पच्चीस सुनहरे, कमल रचाते॥ पूज्य...

ॐ ह्रीं देवकृत अतिशय कमलगमनत्व-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ।29 ॥

प्रभु सान्निध्य प्राप्त कर जग के, सुख पल-पल हों।
फूल फलों से लदे वृक्ष धन्य-धान्य फसल हों॥ पूज्य...

ॐ ह्रीं देवकृत अतिशय सर्वफलधान्य-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ।30 ॥

जिनवर का जब विहार होता, यों पुद्गल हों।
शरद काल के निर्मल जल सम नभ-मण्डल हों॥
पूज्य देवकृत चौदह अतिशय, सुर की माया।
अरिहन्तों को करके नमोऽस्तु, अर्घ्य चढ़ाया॥

ॐ ह्रीं देवकृत अतिशय निर्मलाकाश-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥31॥

देवों के भी देव जहाँ पर, देखो शोभें।
ए जी! ओ जी! आऔ जी!, जयकारे गूँजें॥ पूज्य...

ॐ ह्रीं देवकृत अतिशय जयकारध्वनि-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥32॥

सूर्य हजारों जैसा चमके, चलता आगे।
देवोपनीत धर्मचक्र से, दुनियाँ जागे॥ पूज्य...

ॐ ह्रीं देवकृत अतिशय धर्मचक्र-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥33॥

प्रभु विहार में आगे मंगल, अष्ट द्रव्य भी।
छत्रादिक भी विहार करते, चलें भव्य भी॥ पूज्य...

ॐ ह्रीं देवकृत अतिशय मंगलद्रव्य-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥34॥

अष्टप्रातिहार्य (चौपाई)

पृथ्वीकायिक मणि रत्नों का, अशोक तरु है सुख का झौंका।
प्रभु अरिहन्त तरूतल सोहें, कष्ट हरें भक्तों को मोहें॥

ॐ ह्रीं अशोकतरु प्रातिहार्य-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥35॥

ऊर्ध्वमुखी पुष्पों की वर्षा, देव करें मन सब का हर्षा।
प्रभु अरिहन्त वचन सम सोहें, बंध हरें भक्तों को मोहें॥

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥36॥

सुरगण चौंसठ चँवर ढुरायें, नम्र भाव से उच्च उठाएँ।
प्रभु अरिहन्त दिगम्बर सोहें, कलुष हरें भक्तों को मोहें॥

ॐ ह्रीं चँवर प्रातिहार्य-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥37॥

कोटि सूर्य सम चमक रहा है, भामण्डल भी दमक रहा है।
प्रभु अरिहन्त पृष्ट में सोहें, भ्रमण हरें भक्तों को मोहें॥
ॐ ह्रीं भामण्डल प्रातिहार्य-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥38॥

वीणा मुरली वाद्य बजाएँ, जागो-जागो जगत जगाएँ।
प्रभु अरिहन्त दुंदुभि सोहें, शान्ति करें भक्तों को मोहें॥
ॐ ह्रीं देवदुंदुभि प्रातिहार्य-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥39॥

हीरा-मोती की लड़ियाँ हैं, चंदा सम सिर पर बढ़िया हैं।
प्रभु अरिहन्त छत्रत्रय सोहें, छाँव करें भक्तों को मोहें॥
ॐ ह्रीं छत्रत्रय प्रातिहार्य-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥40॥

योजन तक ओंकार निराली, महा अठारह भाषा वाली।
प्रभु अरिहन्त दिव्यध्वनि सोहें, मोह हरें भक्तों को मोहें॥
ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि प्रातिहार्य-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥41॥

स्वर्णिम रत्न जड़ित सिंहासन, जिस पर सहस्त्रदल कमलासन।
प्रभु अरिहन्त अधर में सोहें, चरण-शरण भक्तों को मोहें॥
ॐ ह्रीं सिंहासन प्रातिहार्य-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥42॥

अनन्त चतुष्टय (हाकलिका)

दर्शन आवरणी क्षय कर, अनन्त केवल दर्शन कर।
लोकालोक निहारे रे, अरिहन्ता जग तारे रे॥
ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥43॥

ज्ञानावरणी नष्ट हुआ, अनन्त केवलज्ञान हुआ।
सकल द्रव्य गुण पर्यायें, निज शुद्धातम झलकाएँ॥
ॐ ह्रीं अनन्तज्ञान-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥44॥

कर्माश्रित भव सुख त्यागा, अनन्तसुख सम्यक् जागा।
नमोऽस्तु प्रभु अरिहन्तों को, सुख बाँटें हम भक्तों को॥
ॐ ह्रीं अनन्तसुख-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥45॥

सांसारिक बल दूर हुए, आत्मिक बल भरपूर हुए।
अनन्तवीर्य की बलिहारी, अरिहन्ता शिव अधिकारी॥

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्य-गुणी अरिहन्तदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥46॥

(सखी)

तज मोहनीय की पीड़ा, पाए सम्यक् गुण हीरा।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोस्तु करो रे॥

ॐ ह्रीं मोह-भ्रमहारी सम्यग्गुणधारी श्री सिद्धदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥47॥

सब ज्ञानावरणी नाशा, तब केवलज्ञान प्रकाशा।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोस्तु करो रे॥

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहारी अनन्तज्ञान गुणधारी श्री सिद्धदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥48॥

दर्शन आवरणी हारी, जय अनन्तदर्शन धारी।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोस्तु करो रे॥

ॐ ह्रीं कुदर्शनहारी अनन्तदर्शन गुणधारी श्री सिद्धदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥49॥

सब अन्तराय को मारे, निज अनन्तवीर्य उभारे।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोस्तु करो रे॥

ॐ ह्रीं अन्तरायहारी अनन्तवीर्य गुणधारी श्री सिद्धदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥50॥

प्रभु नाम कर्म के भेत्ता, सूक्ष्मत्व गुणों के नेता।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोस्तु करो रे॥

ॐ ह्रीं नामकर्म हारी सूक्ष्मत्व गुणधारी श्री सिद्धदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥51॥

प्रभु आयु कर्म नशाए, अवगाहनत्व गुण पाए।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोस्तु करो रे॥

ॐ ह्रीं आयुकर्महारी अवगाहनत्व गुणधारी श्री सिद्धदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥52॥

प्रभु गोत्र कर्म के नाशी, अगुरुलघुत्व गुण वासी।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोस्तु करो रे॥

ॐ ह्रीं गोत्रकर्महारी अगुरुलघुत्व गुणधारी श्री सिद्धदेवेभ्योअर्घ्यं... ॥53॥

प्रभु वेदनीय दुख हर्त्ता, अव्याबाधत्व सुख धर्त्ता।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोस्तु करो रे॥

ॐ ह्रीं वेदनीयकर्महारी अव्याबाधत्व गुणधारी श्री सिद्धदेवेभ्यो अर्घ्यं... ॥54॥

प्रथमानुयोग (ज्ञानोदय)

जो परमार्थ बताने वाले, चरित पुराण शास्त्र होते।
शंका रहित रहें ज्यों के त्यों, देकर पुण्य, पाप धोते॥
बोधि-समाधि के भण्डारे, जो श्रद्धा मजबूत करें।
वो प्रथमानुयोग उन्हीं को, लेकर अर्घ्य नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथमानुयोग रूप शास्त्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥55॥

करणानुयोग

लोकालोक विभाग बताएँ, षट्कालों के परिवर्तन।
सभी योनियों सब गतियों के, हाल बताएँ दर्पण सम॥
अपने भावों के फल क्या हों, भवदुख से भयभीत करें।
वो करणानुयोग उन्हीं को, लेकर अर्घ्य नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री करणानुयोग रूप शास्त्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥56॥

चरणानुयोग

श्रावकचर्या मुनिचर्या का, सम्यग्ज्ञान सिखाए जो।
यम-संयम चारित्र धारने, रक्षासूत्र बताए जो॥
राग-द्वेष की वृत्ति त्यागने, चेतन शुद्ध स्वरूप करें।
वो चरणानुयोग उन्हीं को, लेकर अर्घ्य नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री चरणानुयोग रूप शास्त्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥57॥

द्रव्यानुयोग

जीवाजीव पुण्य-पापों के, बंध-मोक्ष के तत्त्वों के।
सत्य स्वरूप बताकर हरते, मोह अँधेरे भक्तों के॥

''सव्वे सुद्धा हु सुद्ध णया'' से, सिद्ध रूप चैतन्य करें।
वो द्रव्यानुयोग उन्हीं को, लेकर अर्घ्य नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री द्रव्यानुयोग रूप शास्त्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥58॥

सम्यग्दर्शन (ज्ञानोदय)

देव-शास्त्र-गुरु की श्रद्धा बिन, तत्त्वों की रुचि हो न सके।
कुल पच्चीस दोष बिन सम्यक्, आत्म मुक्ति भी हो न सके॥
अतः त्याग शंका कांक्षादिक, अष्टगुणी श्रद्धान मिले।
क्षायिक सम्यग्दर्शन करके, सिद्ध स्वरूपी धाम मिले॥

(सोरठा)

मिथ्यादर्शन त्याग, सम्यग्दर्शन पा सकें।
अतः किया अनुराग, जिन से निज को पा सकें॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनरूप शास्त्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥59॥

सम्यग्ज्ञान (ज्ञानोदय)

तीर्थंकर की जिनवाणी सुन, संशय विभ्रम मोह तजो।
मिथ्याज्ञान त्याग कर सम्यग्ज्ञान आठ गुण शीघ्र भजो॥
''आगम चक्खु साहू'' बनकर, पंच गुणी स्वाध्याय करो।
समयसार के ज्ञानी बनकर, परमानंदी ध्यान धरो॥

(सोरठा)

पाकर सम्यग्ज्ञान, आत्मज्ञान में लीन हों।
सो हो केवलज्ञान, सोऽहं पा स्वाधीन हों॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानरूप शास्त्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥60॥

सम्यक्चारित्र (ज्ञानोदय)

सम्यग्दर्शन ज्ञान प्राप्त कर, अगर नहीं चारित्र लिया।
ज्ञानं भारं क्रियां बिना तो, निज को कौन पवित्र किया॥

पाप क्रियाओं के त्यागी बन, तेरह विध चारित्र धरें।
परम शुद्ध उपयोग नाँव से, भवसागर को पार करें॥

(सोरठा)

धर्म रहा चारित्र, जीव मात्र का मित्र है।
करता चित्त पवित्र, निज रमणी का चित्र है॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्ररूप शास्त्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥61॥

आचार्य परमेष्ठी

(विष्णु)

जो छत्तीस मूलगुण धारें, गुरु आचार्य वही।
शिक्षा दीक्षा दण्ड प्रदाता, देते राह नई॥
चरण शरण हमको अपनी दें, दीक्षा गुणी करो।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, तुम तो कृपा करो॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्यपरमेष्ठीरूप गुरुभ्यो अर्घ्यं... ॥62॥

उपाध्याय परमेष्ठी

जो पच्चीस मूलगुण धारें, उपाध्याय गुरु वो।
रहस्य उद्घाटक आगम के, निज अध्ययन शुरु हो॥
अघ अज्ञान हमारा हर के, सम्यग्ज्ञान भरो।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, तुम तो कृपा करो॥

ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायपरमेष्ठीरूप गुरुभ्यो अर्घ्यं... ॥63॥

साधु परमेष्ठी

जो अट्ठाईस मूलगुणी हों, नग्न दिगंबर जो।
ज्ञानी ध्यानी करें तपस्या, मुक्ति स्वयंवर को॥
जैन धर्म के राज दुलारे, जग को सुखी करो।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, तुम तो कृपा करो॥

ॐ ह्रीं श्री साधुपरमेष्ठीरूप गुरुभ्यो अर्घ्यं... ॥64॥

पूर्णार्घ्य

श्री अरिहन्त सिद्ध आचारज, उपाध्याय साधु।
श्री जिनधर्म जिनागम, मंदिर चैत्य करें जादू॥
देव-शास्त्र-गुरु रत्नत्रय दो, भव दुख शोक हरो।
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, तुम तो कृपा करो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जाप मंत्र-ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा)

देव-शास्त्र-गुरु तीन हैं, धर्म रत्न भगवान।
पृथक-पृथक वा साथ में, हो नमोऽस्तु गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

देव-शास्त्र-गुरु तीन रत्न हैं, जो रत्नत्रय रूप रहे।
जो व्यवहार रूप रत्नत्रय, दाता निश्चय रूप रहे॥
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, देव सिद्ध अरिहंत रहे।
मुनि निर्ग्रन्थ हमारे गुरुवर, तीनों के हम भक्त रहे॥1॥
जड़ रत्नों का मोह त्यागकर, चेतन रत्न परखते जो।
विषय भोग संसार देह तज, नग्न दिगंबर बनते वो॥
बाह्य रूप में पिछी कमंडल, अन्दर चेतन में रहते।
या तो अपने में रहते या, अपने वालों में रहते॥2॥
पहले गुरु आचार्य हमारे, परमेष्ठी छत्तीस गुणी।
उपाध्याय पच्चीस गुणी फिर, साधु रहे अठबीस गुणी॥
जिन भक्तों के नग्न दिगंबर, परम पूज्य गुरुदेव यही।
इनके अनुचर जैन दिगंबर, कहलाते स्वयमेव सही॥3॥

ये निर्ग्रन्थ साधु जब चढ़ते, क्षपकश्रेणी का तुंग शिखर।
तो छ्यालीस मूलगुण धारी, बन जाते अरिहंत प्रवर॥
कर्म घातिया की सैंतालिस, अघातिया की सोलह भी।
कुल त्रेसठ प्रकृति को हरकर, सजें सभायें बारह भी॥4॥
दिव्यध्वनि ओंकार रूप फिर, खिरे निरक्षर भाषा में।
महा अठारह भाषा जिसमें, सात शतक लघु भाषा में॥
अनेकांत स्याद्वादमयी जो, गणधर गूँथे शास्त्रों को।
यही शास्त्र हैं द्वादशांग मय, ज्ञान दिलाएँ भक्तों को॥5॥
ये अरिहन्त जिनेश्वर ज्यों ही, समवसरण का त्याग करें।
योगनिरोध धारकर स्वामी, मुक्तिवधू से राग करें॥
अष्टकर्म हर सिद्धचक्र में, मिल बैठे शुद्धातम से।
इन्हीं देव अरिहंत सिद्ध के, गुण गाने हम आ धमके॥6॥
गुण गाने का यही प्रयोजन, आयोजन परमातम का।
वीतराग विज्ञान प्राप्त कर, पर्व करें शुद्धातम का॥
बस इतना सा काम करा दो, भव-भव तक हम पूजेंगे।
'सुव्रतसागर' मुनि के नमोऽस्तु, मोक्ष महल तक गूँजेंगे॥7॥

(सोरठा)

यथाशक्ति हम पूज, देव-शास्त्र-गुरु नाम को।
कर लें आतम खोज, सो नमोऽस्तु धर ध्यान हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

देव-शास्त्र-गुरुवर करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, देव-शास्त्र-गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

(दोहा)

कोरोना के काल में, जिनशासन के धाम।
देव-शास्त्र-गुरु नाम का, सादर लिखे विधान॥
रवि-पुष्य योग शिवपुरी, दो हजार सन बीस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

(इति शुभम् भूयात्)

❑ ❑ ❑

आरती

(लय-छूम छूम छना ननना बाजे...)

छूम-छूम छना ननना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा, करूँ आरतिया- छूम-छूम...॥

सच्चे देव शास्त्र गुरु सच्चे, जिन्हें पूजते हैं हम बच्चे।
श्रद्धालु की श्रद्धा, बाबा करूँ आरतिया- छूम-छूम....॥1॥

देव शास्त्र गुरु शोभें ऐसे, भक्तों के रत्नत्रय जैसे।
हमको भी मोह नशाएँ, बाबा करूँ आरतिया- छूम-छूम....॥2॥

देव शास्त्र गुरु के अनुरागी, त्यागें पाप बने वैरागी।
शुद्धातम को ध्याएँ, बाबा करूँ आरतिया- छूम-छूम....॥3॥

कर्म कलंक हरें हम स्वामी, हों अरिहन्त सिद्ध आगामी।
'सुव्रत' 'विद्या' पाएँ, बाबा करूँ आरतिया- छूम-छूम....॥4॥

❑ ❑ ❑

समाधि भावना

भगवन् सदैव मुझ पै, हो छत्र छाया तेरी।
चरणों में आपके ही, होवे समाधि मेरी॥
1. दर्शन तुम्हारा करके, सिर भी तुम्हें झुकाऊँ।
शास्त्रों का पान करके, तुम सा ही रूप पाऊँ॥
सत्संग करने मुझसे, होवे कभी न देरी। चरणों...
2. पर के न दोष बोलूँ, बोलूँ मधुर वचन मैं।
आगम का ले सहारा, अपना करूँ मनन मैं॥
जब तक न मोक्ष पाऊँ, रख लेना लाज मेरी। चरणों...
3. जब भी मरण हो मेरा, संन्यास से मरण हो।
मुनियों के साथ गुरु के, चरणों की बस शरण हो॥
जिनवाणी माँ की गोदी, छवि सामने हो तेरी। चरणों...
4. बचपन से आपके जो, चरणों की की हो सेवा।
यदि चाहते उसी का, बस फल यही हो देवा॥
णमोकार जपते-जपते, सल्लेखना हो मेरी। चरणों...
5. जब तक मुझे मिले ना, निर्वाण की नगरिया।
तब तक चरण तुम्हारे, मेरे मन में हो सँवरिया॥
मेरा हृदय न छोड़े, चरणों की छाँव तेरी। चरणों...
6. बस एक भक्ति तेरी, दुख संकटों को हरती।
बोधि समाधि दे के, सुख संपदा भी भरती॥
ओंकारमय बना दो, हर श्वाँस नाथ मेरी। चरणों...
7. जयवंत हो जिनशासन, हो जय-जिनेन्द्र नारा।
निर्ग्रंथ पंथ धारूँ, तजूँ पाप पंथ सारा॥
'सुव्रत' की प्रार्थना ये, बरसे कृपा घनेरी। चरणों...

===